महादेव भैरव प्रमुख मंत्र संग्रह

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

सर्वव्यापी, जगत् गुरु, परब्रह्म, देवताओं के ईश्वर, तंत्र रचयिता, धर्मवृक्ष, महादेव भगवान् शिव अनेक स्वरूपों एवं मंत्रों में प्रतिष्ठित होकर जगत् में पूजित होते हैं। संसार की रक्षा एवं कल्याण हेतु भगवान् महाकाल जिन-जिन कल्याणकारी स्वरूपों में स्वयं प्रकट हुए हैं उन्हें भैरव या रुद्र कहा जाता है। भक्तों के भयों एवं दुःखों का भंजन करने के कारण इनके भयंकर, संहारकर्ता तथा मृत्युमय स्वरूप को भैरव कहा जाता है।

निष्काम भाव से साधारण भैरव पूजन में गुरु की आवश्यकता कम प्रतीत होती है, परंतु षट्कर्मों की सिद्धि हेतु तंत्रोक्त उपासना में गुरु की आवश्यकता अनिवार्य रूप से होती है, क्योंकि भैरवजी स्वभाव में उग्र, स्वरूप में भयंकर और कार्य में संहारकारी हैं। इसके अतिरिक्त साधना पथ में आगे बढ़ते-बढ़ते मनुष्य के जीवन में एक ऐसी उच्च अवस्था अवश्य आती है जब मनुष्य को देवता के संकेतों अथवा दिशा-निर्देशों को समझने हेतु एक साधक-गुरु की परम आवश्यकता होती है। वह गुरु जो शास्त्रज्ञान तथा तत्त्वज्ञान का ज्ञाता हो। साधक के प्रश्नों का समुचित उत्तर वही महापुरुष दे सकता है, जिसे शास्त्रों का भी पर्याप्त ज्ञान हो और तत्त्व का भी अनुभव हो। कारण कि केवल शास्त्रज्ञान हो, तत्त्व का अनुभव न हो तो

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

उसकी बातें वैसी ठोस नहीं होंगी, जिससे साधक संतुष्ट हो जाये और अगर केवल तत्त्वज्ञानी हो, पर शास्त्रज्ञान न हो तो वह साधक की विविध शंकाओं का सप्रमाणणिक समाधान नहीं कर पायेगा, ऐसे महागुरु की प्राप्ति परम सौभाग्य से ही होती है। निःसन्देह एक उच्चकोटि साधक-गुरु, ईश्वर के स्वभाव और संकेतों को एक साधारण मनुष्य से कही अधिक जानता है।

तंत्रशास्त्रों में भगवान् शिव से सम्बन्धित अनेक मंत्रों एवं पूजा पद्धति का सविस्तार वर्णन मिलता है। यहां अपनी क्षमतानुसार महादेव एवं उनके स्वरूपों के केवल प्रमुख मंत्रों का वर्णन कर रहा हूं। जिनका कामना और गुरु आज्ञानुसार साधक को चयन करना चाहिये। भगवान् भैरव विघ्नहर्ता एवं ज्ञानप्रदाता हैं। क्रोधराज की उपासना से संसार के समस्त पाश, दुःख, रोगविकार, बन्धन एवं शत्रु आदि विनष्ट हो जाते हैं और मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। कोई भी तांत्रिक सिद्धि इनकी कृपा के बिना मनुष्य सिद्ध नहीं कर सकता। समस्त गुप्त सिद्धियों की चाबी महाविकराल भैरवजी के चरणों में ही विराजित रहती है। इसके अतिरिक्त दस महाविद्याओं के साथ उनके भैरव या शिव की दशांश पूजा करने का निर्देश भी तंत्रशास्त्रों में है।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

मनुष्य के प्रबल पुण्य कर्मों का उदय होने पर ही इनकी तंत्रोक्त साधना करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। अतः जब अवसर मिले तो मनुष्य यत्नपूर्वक महायोगी भगवान् शिव की भक्ति में लीन होकर इनके मंत्र को विधिमय सिद्ध करे। भक्ति से उत्तम कोई साधन नहीं है। तीनों लोकों और चारों युगों में भक्ति के समान सुखदायक दूसरा कोई मार्ग नहीं है। यह ज्ञान-वैराग्य की जननी है और मुक्ति इसकी दासी है।

आकाशभैरव मंत्र- 'ॐ खें खां खं फट् प्राण-ग्रहसि प्राण-ग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।'

अमृतेश्वर मंत्र- 'ॐ जूं फट् अमृतेशाय नमः।

त्र्यम्बक मंत्र- 'ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।'

दक्षिणामूर्ति मंत्र- 1- 'ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रयच्छ स्वाहा।'

2- 'ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूलनिवासिने। ध्यानैकनिरतांगाय नमो रुद्राय शंभवे ह्रीं ॐ।'

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

त्वरितरुद्र मंत्र- 'ॐ यो रुद्रोऽग्नौयोऽप्सुय औषधीशु यो रुद्रो विश्वाभुवनाविवेश तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु।'

खड्गरावण मंत्र- 'ॐ नमः पशुपतये ॐ नमो भूताधिपतये ॐ नमो रुद्राय ॐ नमो रुद्राय खड्गरावण विहर-विहर सरसर नृत्य-नृत्य श्मशानभस्मार्चितशरीराय घण्टाकपालमालादिधराय व्याघ्रचर्म परिधानाय शशांककृतशेखराय कृष्णसर्पयज्ञोपवीतिने चल-चल वल्गु-वल्गु अनिवर्त्त कपालिने हन-हन भूतान् त्रासय-त्रासय कट-कट रुद्र! अंकुशेन शमय प्रवेशय-प्रवेशय आवेशय-आवेशय चण्डासि धराधिपति रुद्र! ज्ञापय स्वाहा।'

शिव मंत्र- 'ॐ नमः शिवायः।'

अर्धनारीश्वर मंत्र- 'रं क्षं मं यं औं ऊं।'

महाशास्ता (हरिहरपुत्र) मंत्र- 'ॐ ह्रीं हरिहरपुत्राय पुत्र लाभाय शत्रुनाशाय मदगजवाहनाय महाशास्ताय नमः।'

असितांग भैरव मंत्र- 'ॐ नमो असितांग भैरवाय स्वाहा।'

बटुक भैरव मंत्र- 'ॐ ह्रीं बटुक आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं।'

महेश्वर मंत्र- 'ॐ ह्रां महेश्वराय नमः।'

सदाशिव मंत्र- 'ॐ ऐं सौः क्लीं सदाशिवाय नमः।'

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

रुद्र मंत्र- 1- 'ॐ ह्रां रुद्र प्रसीद-प्रसीद नमः।'

2- 'ॐ नमो भगवते रुद्राय।'

महादेव मंत्र- 'ॐ ह्रीं महादेवाय नमः।'

भूत भैरव मंत्र- 'ॐ ह्रीं भैरव भयकरहर मां रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा।'

शिव भैरव मंत्र- 'ॐ नमो शिव भैरवाय शत्रु नाशाय सर्वभूत दमनाय हुं फट् स्वाहा।'

आनन्द भैरव मंत्र- 1- 'ॐ नमो भगवते आनन्द भैरवाय नमः।'

2- 'ह स क्ष म ल व र यूं आनन्द भैरवाय स्वाहा।'

स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र- 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्रय विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।

एकपाद भैरव मंत्र- 'ॐ नमो भगवते एकपाद भैरवाय हुं ॐ नमः।'

हनुमान मंत्र- 'ॐ नमो भगवते हनुमते महारूद्राय हुं फट् स्वाहा।'

लात भैरव मंत्र- 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रौं हौं हूं क्षूं लात भैरवाय क्षूं हूं हौं क्रौं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ नमः।'

काल भैरव मंत्र- 1- 'ॐ क्रीं कालभैरवाय ह्रीं ॐ नमः।

2- हूं ॐ नमो भगवते काल भैरवाय सकल शत्रुं संहारय-संहारय स्वाहा।'

3- 'ॐ ह्रीं नमः श्रीकाल भैरवाय सकल शत्रु दमनाय ह्रीं फट्।'

5- 'ॐ नमो भगवते काल भैरवाय मम सर्व दारिद्रय नाशय-नाशय स्वाहा।'

महाकाल भैरव मंत्र- 1- 'ॐ ह्रौं महाकालेश्वराय नमः।'

2- 'ॐ महाकालाय नमः।'

3- 'ह्रीं ह्रीं हूं महाकाल ह्रीं ह्रीं हूं।'

4- 'हूं हूं महाकाल प्रसीद प्रसीद ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

5- 'ॐ ऐं महाकालाय हूं ठः ठः ह्रीं ॐ महाकालाय स्वाहा।'

6- 'ॐ नमो भगवते महाकाल भैरवाय कालाग्नितेजसे अमुक शत्रुं मारय-मारय पोथय-पोथय हुं फट् स्वाहा।'

7- हूं हूं महाकाल सर्व व्याधिं नाशय-नाशय हुं फट् स्वाहा।'

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

संहार भैरव मंत्र- 1- 'ॐ ऐं क्लीं सौः संहाराय स्वाहा।'

2- 'ॐ ऐं क्लीं सौः संहार भैरवाय मम शत्रून् संहारय-संहारय स्वाहा।'

ईश्वर मंत्र- 'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ईश्वराय नमः।'

पिनाकी मंत्र- 'ॐ जूं ह्रीं श्रीं पिनाकिने नमः।'

क्रोध भैरव मंत्र- 1- 'ॐ भ्रं भ्रं भ्रं क्रोध भैरवाय मम समस्त गुप्त शत्रून् उच्चाटय भ्रं भ्रं भ्रं फट्।'

2- 'ॐ हुं वज्र फट् क्रुं क्रौं क्रुं क्रुं हुं हुं फट।'

3- 'ॐ वज्रमुखे सर-सर फट्।'

स्वच्छन्द भैरव मंत्र- 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रौं हौं हूं क्षूं स्वच्छन्द भैरवाय क्षूं हूं हौं क्रौं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ नमः।'

नीलकण्ठ मंत्र- 'ॐ ह्सौः ह्रां नीलकण्ठाय नमः।'

त्रिकालाग्नि भैरव मंत्र- 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रौं हौं हूं क्षूं त्रिकालाग्नि भैरवाय क्षूं हूं हौं क्रौं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ नमः।'

क्रूर भैरव मंत्र- 'ॐ क्रीं क्रीं ह्रीं क्रूरभैरव प्रसीद-प्रसीद स्वाहा।'

क्रोधनेश भैरव मंत्र- 'ॐ क्रीं गं क्रोधनेशाय नमः।'

वीरभद्र भैरव मंत्र- 1- 'ॐ वीरभद्राय अतिक्रूराय रुद्रकोपं संभवाय सर्वदुष्ट निवर्हणाय हुं फट् स्वाहा।'

2- 'ॐ वीरभद्राय वैरिविंशविनाशाय सर्वलोकभयंकराय भीमवेषाय हुं फट् श्भ्रौं श्भ्रौं ह्रीं खं फट् रिपुन् फट् स्वाहा।'

भीषण भैरव मंत्र- 'ॐ ऐं ह्रीं भीषण भैरवाय नमः।'

चण्ड भैरव मंत्र- 'ॐ क्रीं क्रीं ह्रीं चण्ड भैरवाय नमः।'

कपालिश भैरव मंत्र- 'ॐ गं क्लीं कपालीशाय स्वाहा।'

रुरु भैरव मंत्र- 'ॐ रुं ह्रीं रुरवे नमः।'

उन्मत्त भैरव मंत्र- 'ॐ क्रीं क्रीं भैरवाय क्रीं क्रीं फट्।'

कराल भैरव मंत्र- 'ॐ क्रीं शिवाय स्वाहा।'

पशुपति मंत्र- 1- 'ॐ ऐं क्लीं सौः पशुपते स्वाहा।'

2- 'ॐ श्लीं पशुं हुं फट्।'

3- 'ॐ श्रीं पशुं हुं फट्।'

महापशुपतास्त्र मंत्र- 'ॐ नमो महापशुपतास्त्राय! स्मरण मात्रेण प्रकटय-प्रकटय, शीघ्रं आगच्छ-आगच्छ, मम सर्वशत्रुसैन्यं विध्वसंय-विध्वंसय, मारय-मारय हुं फट्।'

विकराल भैरव मंत्र- 'ॐ ऐं ह्रीं विकरालाय स्वाहा।'

कालाग्नि भैरव मंत्र- 'ॐ श्रीं ह्रीं कालाग्नये नमः।'

मृड मंत्र- 'ॐ ह्रीं मृडाय नमः।'

सद्योजात मंत्र- 'ॐ ह्रां गं सद्योजाताय नमः।'

अघोर मंत्र- 'अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।'

अघोरास्त्र मंत्र- 'ह्रीं स्फुर-स्फुर प्रस्फुर-प्रस्फुर घोर घोरतर तनुरुप चट-चट, प्रचट-प्रचट कह-कह वम-वम बन्ध-बन्ध घातय-घातय हुं फट्।'

सिद्धभैरव मंत्र- 'ॐ नमो भगवते विजय भैरवाय प्रलयान्तकाय महाभैरव्यै महाभैरवायै सर्वविघ्न निवारणाय शक्तिधराय चक्रपाणये वटमूलसन्निषण्णाय अखिल गणनायकाय आपदुद्धारणाय आकर्षय-2 आवेशय-2 मोहय-2 भ्रामय-2 शीघ्रं भाषय ह्रां ह्रीं त्रिपुरताण्डवाय अष्टभैरवाय भाषय-2 स्वाहा।'

भूतेश्वर मंत्र- ''ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलिकलिनखाय रौद्रदंष्ट्राकरालवक्त्राय त्रिनयनाय धगधगित पिशंगललाटनेत्राय तीव्रकोपानलामिततेजसे पाशशूलखट्वांग डमरुकधनुर्बाणमुद्गराभय दण्डत्रासमुद्राव्ययदसंयदाइदण्डमण्डिताय कपिलजटाजूटार्द्धचन्द्रधारिणे

भस्मरागरंजितविग्रहाय उग्रफणिकालकूटाटोपमण्डितकण्ठदेशाय जय जय भूतनाथामरात्मन् रूपं दर्शय-दर्शय नृत्य-नृत्य चल-चल पाशेन बंध-बंध हुंकारेण त्रासय-त्रासय वज्रदण्डेन हन-हन निशितखंगेन छिन्धि-छिन्धि शूलाग्रेण भिन्धि-भिन्धि मुद्गरेण चूर्णयचूर्णय सर्वग्रहान आवेशयावेशय स्वाहा।''

उग्र भैरव मंत्र- 'ॐ नमो भगवते उग्र भैरवाय सर्वविघ्ननाशाय ठः ठः स्वाहा।'

भीम मंत्र- 'ॐ ह्रीं भैं भीमाय नमः।'

कामेश्वर मंत्र- 'ऐं क्लीं सौः ॐ श्रीं ह्रीं कामेश्वर ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं।'

शर्व मंत्र- 'ॐ ह्रीं श्रीं शर्वाय नमः।'

त्रिपुर भैरव- 'ह्रीं श्रीं हंसः ह्सौं स्वाहा।'

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

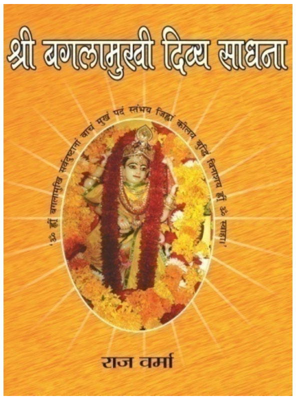

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com